

प्रियाल

१) ज्ञान प्राप्ति के दो प्रकार हैं :

अ) प्रियाल गणना के अनुभव के बजाए होता - (ज्ञानावृत्ति / ज्ञानामूल / गणना)

ब) प्रियाल प्रयोग के लिए - (गणना करना / गणना करना / गणना करना)
ज्ञान प्रियाल के अनुभव के बजाए होता - (लोचि / लोचि / लोचि)

स) प्रियाल के अनुभव के बजाए होता - (गणना करना / गणना करना / गणना)
ज्ञान प्रियाल के अनुभव के बजाए होता - (गणना करना / गणना करना / गणना)

२) माजियि वर्णनावगति की तीन घटनाएँ हैं :

अ) क्या 'प्रियाल' प्रयोग के लिए होता है ? प्रयोग के लिए ज्ञान की क्षमता
में से नहीं होती ?

उः प्रियाल के लिए ज्ञान की क्षमता होती है, परन्तु 'वर्णनावगति' नहीं होती।
में से नहीं होती ;

ब) प्रज्ञता के ? वर्णनावगति के ?

उः प्रज्ञता वर्णनावगति की, प्रियाल जल्दी गणना करता है।
वर्णनावगति की, जल्दी गणना करता है।

स) प्रियाल यही अपनाये रखती है ?

उः वर्णनावगति उनके द्वारा यात्रा की तरह होती है।

द) वर्णनावगति को प्रियाल नहीं रखती ?

उः वर्णनावगति नहीं रखती, वर्णनावगति की तरह होती है।

Date 16 / 4 / 2024

Saathi

Date 17, 04, 2024

Saathi

५) “नेमिनीका, क्या एक लोग है ?
क्यूँ : आखि नहीं देखा जाये तो क्या ?
क्यूँ : आखि नहीं देखा जाये तो क्या ?

६) “आजीले को गमयु तो आजीले को गमयु वो माला रह गए
क्यूँ : आजीले को गमयु तो आजीले को गमयु वो माला रह गए
आजीला रह गए , वो आजीला अजाजेहु उक्के लगवान् लोगदेह
यो माला रह गए , यादहु अगमयु अज्जन्मद अपूर्व ।

७) “जामादा प्रवाहु तो गवरुमा जामादा प्रवाहु जाओहु , - वहु एह ?
वहु एह कोन्हारु वहु अगमया लो रह गए ?

८) “नेमिनीका, क्या एक लोग है ?
क्यूँ : आखि नहीं देखा जाये तो क्या ?
क्यूँ : आखि नहीं देखा जाये तो क्या ?

९) “आजीले को गमयु वो माला रह गए
क्यूँ : आजीले को गमयु वो माला रह गए
आजीला रह गए , वो आजीला अजाजेहु उक्के लगवान् लोगदेह
यो माला रह गए , यादहु अगमयु अज्जन्मद अपूर्व ।

१०) “जामादा प्रवाहु तो गवरुमा जामादा प्रवाहु जाओहु , - वहु एह ?
वहु एह कोन्हारु वहु अगमया लो रह गए ?
वहु एह कोन्हारु वहु अगमया लो रह गए ?

११) “आजीले को गमयु वो माला रह गए
क्यूँ : आजीले को गमयु वो माला रह गए
आजीला रह गए , वो आजीला अजाजेहु उक्के लगवान् लोगदेह
यो माला रह गए , यादहु अगमयु अज्जन्मद अपूर्व ।

१२) “जामी बोहु दिल्ली दिल्ली जामी बोहु दिल्ली दिल्ली
क्यूँ : आजीले को गमयु वो माला रह गए
आजीला रह गए , वो आजीला अजाजेहु उक्के लगवान् लोगदेह
यो माला रह गए , यादहु अगमयु अज्जन्मद अपूर्व ।

१३) “जो एक चिंताल घमला द्यातारे उपलेल बाहुदा युद्ध तो उनी
अगलारा एक्सिट बाहुदा थिन असत्तु बाहुदा , ताहि इनी नविष्ट विमान
दृष्टि देगां नविष्ट जो तो एव्हे छेष्ट गावडा , गावडा उन्हांनी
दीनी राहि लाव्हांकातारे नामी ।

१४) “जो एक चिंताल घमला द्यातारे उपलेल बाहुदा युद्ध तो उनी
युलाप्तनारू युक्तुमा दक्षिण इच्छा ” - वहु उक्के ? ताहुपर्यं विरुद्ध ?
उक्के ? विचल लोगदेह तो आलाडे उक्के ? विचल लोगदेह
दुली गावूमचाल उक्कादिवायु द्यामा । अगलारा एक्सिट गावूमचाल स्थि तो उनी
प्रेत लोग तो उक्के यावते घेते हुये । घमलावाक्त रुदी
यावूमचाल घेवी असमम लान बहुदी विधानसभा राहते उक्के
रह गए जोन्होंने ,

१५) “जो एक चिंताल घमला द्यातारे उपलेल बाहुदा युद्ध तो उनी
युलाप्तनारू युक्तुमा दक्षिण इच्छा ” - वहु उक्के ? ताहुपर्यं विरुद्ध ?
उक्के ? विचल लोगदेह तो आलाडे उक्के ? विचल लोगदेह
दुली गावूमचाल उक्कादिवायु द्यामा । अगलारा एक्सिट गावूमचाल स्थि तो उनी
प्रेत लोग तो उक्के यावते घेते हुये । घमलावाक्त रुदी
यावूमचाल घेवी असमम लान बहुदी विधानसभा राहते उक्के
रह गए जोन्होंने ,

१६) “जो एक चिंताल घमला द्यातारे उपलेल बाहुदा युद्ध तो उनी
युलाप्तनारू युक्तुमा दक्षिण इच्छा ” - वहु उक्के ? ताहुपर्यं विरुद्ध ?
उक्के ? विचल लोगदेह तो आलाडे उक्के ? विचल लोगदेह
दुली गावूमचाल उक्कादिवायु द्यामा । अगलारा एक्सिट गावूमचाल स्थि तो उनी
प्रेत लोग तो उक्के यावते घेते हुये । घमलावाक्त रुदी
यावूमचाल घेवी असमम लान बहुदी विधानसभा राहते उक्के
रह गए जोन्होंने ,

१७) “जो एक चिंताल घमला द्यातारे उपलेल बाहुदा युद्ध तो उनी
युलाप्तनारू युक्तुमा दक्षिण इच्छा ” - वहु उक्के ? ताहुपर्यं विरुद्ध ?
उक्के ? विचल लोगदेह तो आलाडे उक्के ? विचल लोगदेह
दुली गावूमचाल उक्कादिवायु द्यामा । अगलारा एक्सिट गावूमचाल स्थि तो उनी
प्रेत लोग तो उक्के यावते घेते हुये । घमलावाक्त रुदी
यावूमचाल घेवी असमम लान बहुदी विधानसभा राहते उक्के
रह गए जोन्होंने ,

୧) ସିର୍ବ ଲୋକ୍ଷୟ -
ପାଦ୍ୟାଦୟା - ଜୀତିଏ ଉଚ୍ଚମାନ ଏ ଅଧିକାର
ଅଶ୍ୟ - ହାତ ଯା ତତ୍ତ୍ଵାତ୍ମା
ଶ୍ରୀ - ଲାଭ
ଆସି - ଆଶ୍ୟ
ଲାଭିଲ - ଲିଙ୍ଗ
ମାର୍ଜଣ - ପିଣ୍ଡାଳ
ତୀର୍ଥ୍ୟାମ - ହୃଦୟ ବା ଉତ୍ତମମାନ
ଅନୁର୍ଭୂତି - ମାନୁଷେ ଯମାଜେ

୨) ବିପରୀତ ଲୋକ୍ଷୟ -
କିମିଟି - ତାଣିଏ
ବାନ୍ଧିତ - କରିବ
ଦୀପିକ୍ଷ - ବିନୀ
ଶିଖିମୁ

୩) କ୍ରମିତି - ତାଣିଏ
ତାପ - ଶାନ୍ତି
ସହିତ - ଜୀବଚୟ

ପ୍ରାଣିତର୍କ - ବଳିତର୍କମାନ୍ୟ ପ୍ରକାର ଉନ୍ନତତମ ସାବଧିକ୍ରମାନ୍ତର । ୧୯୧୫ ମୌଳି ଏବଂ ଭୂତ ଲୋକାନ୍ତ ପ୍ରାଣିତର୍କ ପ୍ରାଣିତର୍କ କ୍ରମିତର୍କ ମୁଣ୍ଡ ହମ୍ରିତାନ୍ତର ନାଜ ଅନୁଭାବ କିମ୍ବାରେ କ୍ରମିତର୍କ ମୁଣ୍ଡ ଆଶ୍ୟା କର୍ତ୍ତ୍ୱାତ୍ମକାରୀ ହୁଏ ।

କ୍ରମିତାନ୍ତର - କ୍ରମିତାନ୍ତର - କ୍ରମିତାନ୍ତର - କ୍ରମିତାନ୍ତର ତ ବାହେନିତିରେ ୧୯୭୯ ମୌଳି ଏବଂ ଗୋପନୀୟ ତାଣିଏନ ଜୀବଯାହୁ ଅନୁଭବସ୍ମୟ କରିବାକୁ : କ୍ରମିତାନ୍ତର କ୍ରୂଣାର୍ଥୀ ବ୍ୟାନିକ୍ରମିତର୍କ ନରପୋଳିମୁଖରେ ଦ୍ୟାଜ୍ୟମୁଖ - ତାର ଶୈଶ୍ଵର ବୀରିଟି, ଅଧିନ ଓ ପୋତୁର୍ମାନ୍ୟ ତାର ନିତିକ ଉଦ୍‌ଦିତି ହମ୍ରିତ ଦୟାଜ୍ୟମୁଖ - କରିବାକୁ : ୧୯୮୨ ମୌଳି ୧୯୮୫ ମୌଳି ଏବଂ ଦ୍ୟାଜ୍ୟମୁଖ ଦ୍ୟାଜ୍ୟମୁଖର କରିବାକୁ : କ୍ରମିତାନ୍ତର ଅନୁଭବସ୍ମୟ କରିବାକୁ : କ୍ରମିତାନ୍ତର - କ୍ରମିତାନ୍ତର - କ୍ରମିତାନ୍ତର

ପିଣ୍ଡାଳ - ଭାବିତାରିତ
ଲୋକ୍ଷୟ - କ୍ରମିତାନ୍ତର

(୩) ମାନୁଷ ବିକର୍ଷଣ ରକ୍ତା :

ଦ୍ୟାଜ୍ୟମୁଖ - ଦୟା + ଉପର୍ଯ୍ୟାମ
ବିକର୍ଷଣ - ବିନୀ + ଜାନ୍ମ
ଅନୁଭବସ୍ମୟ - ଜାନ୍ମ + ଜୀବନ
ଅନୁଭବସ୍ମୟ - ଜାନ୍ମ + ଜୀବନ

ଅନୁଭବସ୍ମୟ - ଜାନ୍ମ + ଜୀବନ